



प्रामाणिक, निष्पक्ष, विश्वसनीय...

सुविचार

हममें से हर कोई बड़े काम नहीं कर सकता। लेकिन हम छोटे कामों को बड़े प्यार से कर सकते हैं।

गुरुवार, 5 जुलाई, 2024

www.janabhyudaykranti.in

# विद्यालय पाठ्यक्रम में समाचार पत्र

देश के दक्षिणी छोर के राज्य केरल के सभी विद्यालयों में प्रत्येक कक्षा के छात्रों को समाचार पत्र उपलब्ध कराने और इसे पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बनाने की पहल की जा रही है, जो एक जागरूक, साक्षर और सक्रिय पीढ़ी को बढ़ावा देने की दिशा में प्रशंसनीय कदम है। केरल राज्य शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) द्वारा उठाया गया यह कदम छात्रों के बीच पढ़ने की संस्कृति और भाषा कौशल को बढ़ाने में समाचार पत्र की भूमिका को समझ को दर्शाता है। डिजिटल स्क्रीन के वर्चस्व वाले युग में समाचार पत्र पढ़ने की आदत सूचना उपभोग के लिए अधिक विचारशील दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है।

समाचार पत्र ज्ञान के समृद्ध भंडार होते हैं, जो नियमित रूप से पढ़ने वाले पाठकों को राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान, संस्कृति और खेल से जुड़ी वर्तमान घटनाओं के साथ लगातार अद्यतन करते रहते हैं। स्कूल के पाठ्यक्रम में समाचार पत्र को शामिल करने से छात्रों को वास्तविक समय की जानकारी प्राप्त होगी। स्कूली पाठ्यक्रम में समाचार पत्र को शामिल करके केरल उदाहरण स्थापित कर रहा है, जिसका अनुगामी अन्य राज्यों को भी बनना चाहिए।

समाचार पत्र वाचन और लेखन से छात्रों में विविध दृष्टिकोणों तक सीधी पहुंच प्राप्त होगी, जिससे उन्हें अपने आस-पास की दुनिया की सूक्ष्म समझ विकसित करने में मदद मिलेगी। इस पहल का सबसे महत्वपूर्ण लाभ भाषा कौशल में वृद्धि है। समाचार पत्रों को नियमित रूप से पढ़ने से छात्रों को शब्दावली, परिष्कृत वाक्य संरचनाओं और विभिन्न लेखन शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला से परिचित होने का अवसर मिलेगा। उच्च गुणवत्ता वाली भाषा में यह तल्लीनता पढ़ने की समझ, लेखन क्षमता और समग्र साक्षरता में सुधार के लिए अमूल्य है। इसके अलावा, समाचार पत्र पढ़ने का अभ्यास छात्रों के बोलने और सुनने के कौशल को काफी हद तक बढ़ा सकता है।

इससे उन्हें अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में मदद मिलेगी। वे विभिन्न दृष्टिकोणों को सुनने में रुचि दिखाएंगे। यह अभ्यास आलोचनात्मक सोच, संवाद और बहस की संस्कृति को बढ़ावा देगा, जो एक स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज के लिए आवश्यक है। आज की सूचना समृद्ध दुनिया में भीड़िया साक्षरता एक आवश्यक योग्यता है। समाचार पत्र की सामग्री के साथ आलोचनात्मक रूप से जुड़ने से छात्र विश्वसनीय समाचार और गलत सूचना के बीच अंतर करना सीखेंगे। यह कौशल ऐसे युग में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहाँ झूठी भ्रामक खबरें और गलत सूचनाएं व्याप्त हैं, जो अक्सर धर्म और गलतफहमी का कारण बनती हैं। पाठ्यक्रम में समाचार पत्र को शामिल करने से सीखने के लिए कई रचनात्मक रास्ते भी खुलेंगे।

समाचार पत्र पढ़ना अच्छी आदतों में शामिल है। यह आदत इतनी मूल्य और सस्ती होती है कि कोई भी इसे आसानी से अपना सकता है। समाचार पत्र सस्ते हैं और इसलिए टिकाऊ हैं। समाचार पत्र योजना पढ़ने की आदत को प्रेरित करते हैं। समाचार पत्रों से गैर-शैक्षणिक पढ़ाई छात्रों के लिए बहुत मजेदार हो सकती है। समाचार पत्र की यह खासियत है कि इसमें हर वर्ग के लिए कुछ न कुछ जरूर होता है और आप जिस दिन से इसे पढ़ना शुरू कर देते हैं, उसी दिन से लाभ दिखने लगता है। परंतु दुखद यह है कि इस डिजिटल युग में खासकर बच्चों को पढ़ने की आदत कम हो गई है।

इसी को देखते हुए केरल की स्टेट कार्डसिल ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग ने एक बेहतर पहल के तहत प्रदेश के सभी स्कूलों की हर क्लास में बच्चों को मुफ्त में समाचार पत्र उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। इस पाठ्यक्रम में क्लास शुरू होने के पहले बच्चों को समाचार पत्र पढ़ना होगा। सप्ताह में एक बार छह दिन पढ़ी खबरों पर प्रतियोगिताएं होंगी। ड्राइंग, चित्रकला, चित्र देखकर खबर लिखना, खबर पढ़कर चित्र बनाना, एक छोटा सा समाचार पत्र तैयार करना जैसी मजेदार गतिविधियों के नियमित रूप से अखबार पढ़ने वाले छात्रों का अन्य गतिविधियों में भी प्रदर्शन तुलनात्मक रूप से बेहतर देखा गया है। साथ ही बच्चों को समाचार पत्र पढ़ने के प्रति जागृत करना इस पहल का उद्देश्य है।

नियमित समाचार पत्र पढ़ने से बच्चों में पढ़ने की आदत भी विकसित होती है। आजकल लगभग सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में समसांख्यिक प्रश्न अधिक पूछे जाते हैं और इन्हें घटनाओं से अवगत रहने का सबसे विश्वसनीय स्रोत अखबार होते हैं। स्कॉटलैंड में हुए एक शोध के मुताबिक जो नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़ते हैं उनका स्वास्थ्य समाचार पत्र नहीं पढ़ने वालों की तुलना में 20 फीसद बेहतर पाया गया। इसी शोध में यह बात सामने आई कि नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़ने से तनाव के हार्मोन्स का स्तर कम रहता है। नियमित समाचार पत्र पढ़ने से बच्चों का मस्तिष्क सक्रिय रहता है।

एक समाचार पत्र को तैयार करने वाले पत्रकार कितने श्रमजीवी होते हैं, छात्रों द्वारा समाचार पत्र निर्माण से उन्हें श्रमशीलता का महत्व भी पता चलता है। बड़ा महीन है अखबार का मुलाजिम भी! खबर खुद है, मगर दूसरों की लिखता है! एक पत्रकार खुद के लिए कुछ ये शब्द गढ़ता है: बेसब्र, बेपरवाह, बेशक, बैसलीका हूँ मैं... बेखौफ़, बेमिसाल जीने का तरीका हूँ मैं। इक्कीसवीं सदी के कौशल (आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग और संचार 21वीं सदी के सीखने के कौशल कहे जाते हैं इन्हें संक्षेप में 4सी भी कहते हैं।) विकसित करने में समाचार पत्र वाचन, लेखन कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण हो सकता है जिससे अधिगम प्रभावी हो सकता है।

स्थानीय, देश-दुनिया, खेल, वित्त, जुर्म, पर्यटन, राजनीति आदि विविध क्षेत्रों की जानकारी का बड़ा स्रोत समाचार पत्र है। प्रत्येक समाचार पत्र में संपादकीय पृष्ठ पर विशेषज्ञ की राय होती है जो हर विषय के विभिन्न पहलू को उजागर करते हैं। वचनपत्र में समाचार पत्र पढ़ने की आदत बच्चों के भाषा ज्ञान में भी बढ़ोतरी करता है। साथ ही समाचार पत्र पढ़ने वाले किसी भी विषय पर अपनी बात अधिक पजबूती से रख पाते हैं। समाचार पत्र के नियमित अध्ययन से छात्र बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन का प्रमाण देते हैं। इसके अलावा जोर से पढ़ने और सार्वजनिक रूप से बोलने में आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। समाचार हर दिन विकसित होते हैं। वे गतिविधियों छात्रों को पढ़ने और लिखने में अपने कौशल को बेहतर बनाने में मदद करेंगी। ये कौशल उनमें से हैं जिनका वे अभ्यास करेंगे: मुख्य विचार कैसे खोजें, शब्दावली कैसे बढ़ाएँ, पठन की तुलना कैसे करें, वाक्य कैसे बनाएँ, एक अच्छा प्रश्न कैसे पूछें और एक बढ़िया सारांश कैसे लिखें।

वे कई आलोचनात्मक सोच कौशल का उपयोग करेंगे क्योंकि उन्हें समाचार पत्र में पाई जाने वाली प्रामाणिक सामग्री के साथ वास्तविक करने की आवश्यकता होती है। कक्षा में समाचार पत्र की खबरसूरी यह है कि यह हर दिन ताज़ा होता है। यह आपके पत्र नवीनतम समाचार और जानकारी लेकर आता है और अन्य मीडिया के विपरीत, बहुत सारे विवरणों के साथ खबरसूरी से लिखा हुआ आता है। पत्रकार और रिपोर्टर जो हुआ उसे फिर से बनाने के लिए अधिक जानकारी खोजते हैं, तब कहानियाँ सामने आती हैं। वास्तव में दुनिया की घटनाओं का सच के साथ प्रदर्शन करने में समाचार पत्र से बेहतर कोई अन्य सूचना माध्यम का रिकॉर्ड नहीं है। सामाजिक जागरूकता और सीखने की प्रेरणा में वृद्धि का प्रमाण होते हैं समाचार पत्र।

सीखने की गतिविधियों में भागीदारी में वृद्धि, जैसे चित्र काटना, वाद-विवाद और अन्य गतिविधियों समाचार पत्र के अध्ययन से विकसित की जा सकती हैं। अमेरिकी शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध के अनुसार समाचार पत्र नियमित पढ़ने वाले बच्चे, युवा, बुजुर्ग, कोई भी हों इन लोगों के लिए अधिक और अलग-अलग क्षेत्रों में होते हैं, क्योंकि वे राजनीति, अर्थशास्त्र, सामान्य ज्ञान, खेल, फिल्म और धर्म के बारे में एक जीवंत संवाद स्थापित करते हैं। कदा भी गया है कि एक बात हमेशा याद रखी जानी चाहिए कि देखा हुआ या बोला हुआ तो ड्र की खुशबू की तरह थोड़ी देर में उड़ जाता है, लेकिन लिखा हुआ कालजयी होता है। सदियों का दस्तावेज होता है। शिक्षकों के लिए समाचार पत्र एक विशेष आकर्षण प्रदान करता है। इसे जीवंत पाठ्यपुस्तक कहा गया है और यह उस नाम पर खरा उतरता है। समाचार पत्र का उपयोग पढ़ने, लिखने, सुनने, बोलने, गणित, सामाजिक अध्ययन और विज्ञान में कौशल बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। आलोचनात्मक सोच सीखने के लिए समाचार पत्र का उपयोग करने का स्वाभाविक परिणाम है।

पाठ्यपुस्तकों के विपरीत, जो छात्रों के हाथों में आने तक कई साल पुरानी हो जाती हैं, समाचार पत्र जानकारी से जीवंत हो जाता है। समाचार पत्र सीखने की गतिविधियों के लिए पृष्ठभूमि के रूप में उपयोग करने के लिए असंमित मात्रा में जानकारी के साथ पाठ्यक्रम का विस्तार करता है। मिलाव यह है कि शिक्षकों को कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में समाचार पत्र सामग्री का उपयोग करने और छात्रों की भागीदारी बढ़ाने के तरीकों पर आसपास प्रश्न सवाधिक उचित होगा। दुनिया पत्र में समाचार पत्रों का उपयोग आसपास के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए एक वस्तु के रूप में किया जाता है। एक तरफ हम अपने आस-पास की घटनाओं का वैश्विक परिप्रेक्ष्य प्राप्त करते हैं, वहीं दूसरी तरफ समाचार पत्र छात्रों के बीच शैक्षिक उद्देश्यों के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि विद्यालय, शिक्षा और सीखने का मुख्य स्रोत बने हुए हैं, लेकिन ज्ञान और जागरूकता का विकास एक युवा शिक्षार्थी की पाठ्यत्र गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। इस संबंध में अनेकों शोध हुए हैं।

शिक्षा में समाचार पत्रों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। समाचार पत्र छात्रों की शैक्षिक आवश्यकता को पचास फीसद तक पूरा करते हैं और विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धी बनाकर उनके लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करते हैं। शोध से पता चलता है कि अभी भी बहुत कम लोग घर पर समाचार पत्र पढ़ पाते हैं, लेकिन बच्चों की क्षमताओं को बढ़ाने के संदर्भ में समाचार पत्रों का बहुत महत्व है। शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों को अखबार में कोई ऐसी तस्वीर ढूँढ़ने को कहें जो उन्हें दिलचस्प लगे। उन्हें यह सोचने को कहें कि तस्वीर में क्या चल रहा है। उन्हें यह बताने को कहें कि तस्वीर लेने से ठीक पहले उनके हिस्से से क्या हुआ था और उन्हें लगता है कि उसके बाद क्या होगा। उन्हें अपनी व्याख्या लिखनी चाहिए। फिर, रचनात्मक लेखन के मंज़े के लिए, उन्हें उन सबसे अजीब घटनाओं के बारे में बताने को कहें जो वे सोच सकते हैं कि पहले और बाद में क्या हुआ था। इसका लक्ष्य कामज़ से चित्रों का उपयोग करके कहानी बताना है। यह गतिविधि छात्रों को यह पता लगाने का मौका देती है कि तस्वीर किस तरह से कहानियाँ बता सकती हैं।

छात्रों को आज के समाचार पत्र में मौजूद तस्वीरों को देखने को कहें। फिर छात्र तीन तस्वीरें चुनें और उन्हें बिना शीर्षक के काट लें। वे प्रत्येक तस्वीर को कामज़ की एक अलग शीट पर चिपका सकते हैं और शीट को उस क्रम में रख सकते हैं जिस क्रम में वे कहानी में दिखाई देंगे। अंत में, उन्हें प्रत्येक तस्वीर के नीचे शीर्षक के रूप में प्रत्येक कहानी लिखनी चाहिए। डिस्प्ले (प्रदर्शन) विज्ञापन पूरे अखबार में पाए जाते हैं। वे वर्गीकृत विज्ञापनों से अलग होते हैं क्योंकि वे बड़े होते हैं और अक्सर उनमें चित्र और बड़े अक्षर होते हैं। छात्रों को एक डिस्प्ले विज्ञापन खोजने के लिए शिक्षक कहें जो उनका ध्यान आकर्षित करता है। उन्हें एक पैराग्राफ लिखने के लिए कहें जिसमें बताया गया हो कि उन्हें लगता है कि यह एक अच्छा विज्ञापन है या नहीं। इसने उनका ध्यान कैसे आकर्षित किया? इसे और बेहतर बनाने के लिए वे इसमें क्या बदलाव करेंगे? प्रत्येक छात्र को अपने डेस्क पर कुछ बेचने के लिए एक डिस्प्ले (प्रदर्शन) विज्ञापन बनाने के लिए कहें।

फ़ोटो का संदेश कभी-कभी एक शब्द वाक्य में संदेश की तरह होता है। छात्रों को आज के अखबार को देखने और ऐसे चित्र खोजने के लिए कहें जिनका विषय प्रश्न चिह्न (?) , विस्मयविबोधक चिह्न (!) और अवधि (.) हो सकता है। उन्हें चित्रों को काटने और प्रत्येक चित्र के लिए एक मूल वाक्य लिखने के लिए कहें, जिसमें बताया गया हो कि उन्होंने यह विकल्प क्यों चुना। छात्रों से कहें कि वे कल्पना करें कि उनकी कक्षा में कोई गुप्त मित्र है और आज के अखबार की सुर्खियों से शब्दों का उपयोग करके अपने मित्र के लिए एक दोस्ताना संदेश बनाएँ। वे शब्दों को काटकर संदेश को कामज़ के एक टुकड़े पर चिपका सकते हैं, या वे सिर्फ़ शब्दों को चुनकर संदेश को कामज़ पर लिख सकते हैं। उसके बाद, वे संदेश मित्र को दे सकते हैं। पालतू जानवर अक्सर अखबारों में छपते हैं। कभी-कभी वे अपने मालिक को बचाने जैसे काम करते खबरों में आते हैं। अक्सर वे विज्ञापनों में दिखते हैं। छात्रों को वर्गीकृत विज्ञापनों में पालतू जानवरों का अनुभव ढूँढ़ने के लिए कहें। उन्हें विवरण पढ़ने और यह तय करने के लिए कहें कि इनमें से कोई पालतू जानवर उनके लिए अच्छा पालतू जानवर होगा या नहीं। फिर वे एक ठोस तर्क लिख सकते हैं जिसमें वे सभी कारण शामिल हों कि उन्हें यह पालतू जानवर क्यों रखना चाहिए। समाचार अक्सर दुनिया में होने वाली परभावियों के बारे में होते हैं। क्या कोई अच्छी खबर भी होती है? छात्रों को अच्छी खबर की कहानी खोजने के लिए प्रोत्साहित करें। खबर को अच्छा क्या बनाता है? क्या कहानी का उनके जीवन पर कोई प्रभाव पड़ता है? उन्हें अच्छी खबर का संक्षिप्त सारांश लिखने और अपनी कक्षा के साथ साझा करने के लिए कहें। छात्रों को अखबार से कोई ऐसा लेख चुनने को कहें जो उन्हें दिलचस्प लगे। वे कामज़ के बीच में कुछ शब्दों में मुख्य विचार लिख सकते हैं। फिर वे मुख्य विचार का समर्थन करने वाले कुछ विवरण लिखेंगे। अपनी कक्षा के साथ संज्ञा की परिभाषा की समीक्षा करें। फिर उन्हें आज के अखबार के पहले पन्ने से एक कहानी चुनने और संज्ञाएँ ढूँढ़ने को कहें। वे जो लोग पाते हैं उन्हें लाल रंग से, स्थानों को नीले रंग से और चीज़ों को हरे रंग से रेखांकित कर सकते हैं। फिर अपनी कक्षा में ढूँढ़ने वाली संज्ञाओं का एक सूची बनाएँ।



डॉ. रामानुज पाठक, सतना (शिक्षाविद्)

संपर्क- 7697179890, 7974246591



छात्रों को बताएँ कि वे एक महत्वपूर्ण मासिक पत्रिका के लिए कवर की योजना बनाने के प्रभारी हैं। वे आज के अखबार में से उन पाँच लेखों को देख सकते हैं जो उन्हें लगता है कि उनकी पत्रिका के लिए सबसे अच्छे होंगे। वे पत्रिका के लिए मुख्य पृष्ठ आकल्पन और संयोजन करेंगे, जिसमें ऐसे शीर्षक शामिल होंगे जो लोगों को लेख पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे और ऐसी तस्वीरें जो उनका ध्यान आकर्षित करेंगी। छात्रों को खेल अनुभाग से एक लेख चुनने को कहें। जैसे ही वे कहानी को पढ़ते हैं, वे खेल में इस्तेमाल होने वाले शब्दावली शब्दों की एक सूची बना सकते हैं। फिर उन्हें प्रत्येक शब्द के लिए परिभाषा लिखनी चाहिए और शब्द का अर्थ समझाने के लिए एक चित्र बनाना चाहिए। वे कोई अन्य शब्द जोड़ सकते हैं जो उन्हें लगता है कि खेल से संबंधित है, लेकिन जो लेख में नहीं है।

एक समाचार पत्र को तैयार करने वाले पत्रकार कितने श्रमजीवी होते हैं, छात्रों द्वारा समाचार पत्र निर्माण से उन्हें श्रमशीलता का महत्व भी पता चलता है। बड़ा महीन है अखबार का मुलाजिम भी! खबर खुद है, मगर दूसरों की लिखता है! एक पत्रकार खुद के लिए कुछ ये शब्द गढ़ता है: बेसब्र, बेपरवाह, बेशक, बैसलीका हूँ मैं... बेखौफ़, बेमिसाल जीने का तरीका हूँ मैं। इक्कीसवीं सदी के कौशल (आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग और संचार 21वीं सदी के सीखने के कौशल कहे जाते हैं इन्हें संक्षेप में 4सी भी कहते हैं।) विकसित करने में समाचार पत्र वाचन, लेखन कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण हो सकता है जिससे अधिगम प्रभावी हो सकता है। अत्यधिक रूप से अखबार की महाना इन पंक्तियों से स्पष्ट है:

कुछ पत्रों का समूह हूँ मैं। अलग-अलग पत्रों में अलग-अलग विषय में बाँटा हुआ। इसका भी भारत जैसा हाल है। विविधता में एकता किसी पत्रे पर। राष्ट्रीय किसी पर अंतर्राष्ट्रीय। किसी पर राज्य तो किसी पर शहर का समाचार है। कुछ राजनीतिक, कुछ सामाजिक। कुछ अर्थनीति, कुछ वैज्ञानिक। कुछ धार्मिक, कुछ दार्शनिक। किंतु हर समाचार का सार है। अंत में 'शब्दों के खेत' में आओ खामोशी को बोएँ, तितलियों के पंखों को सपनों की जादुई छड़ी से सहलाएँ...।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)